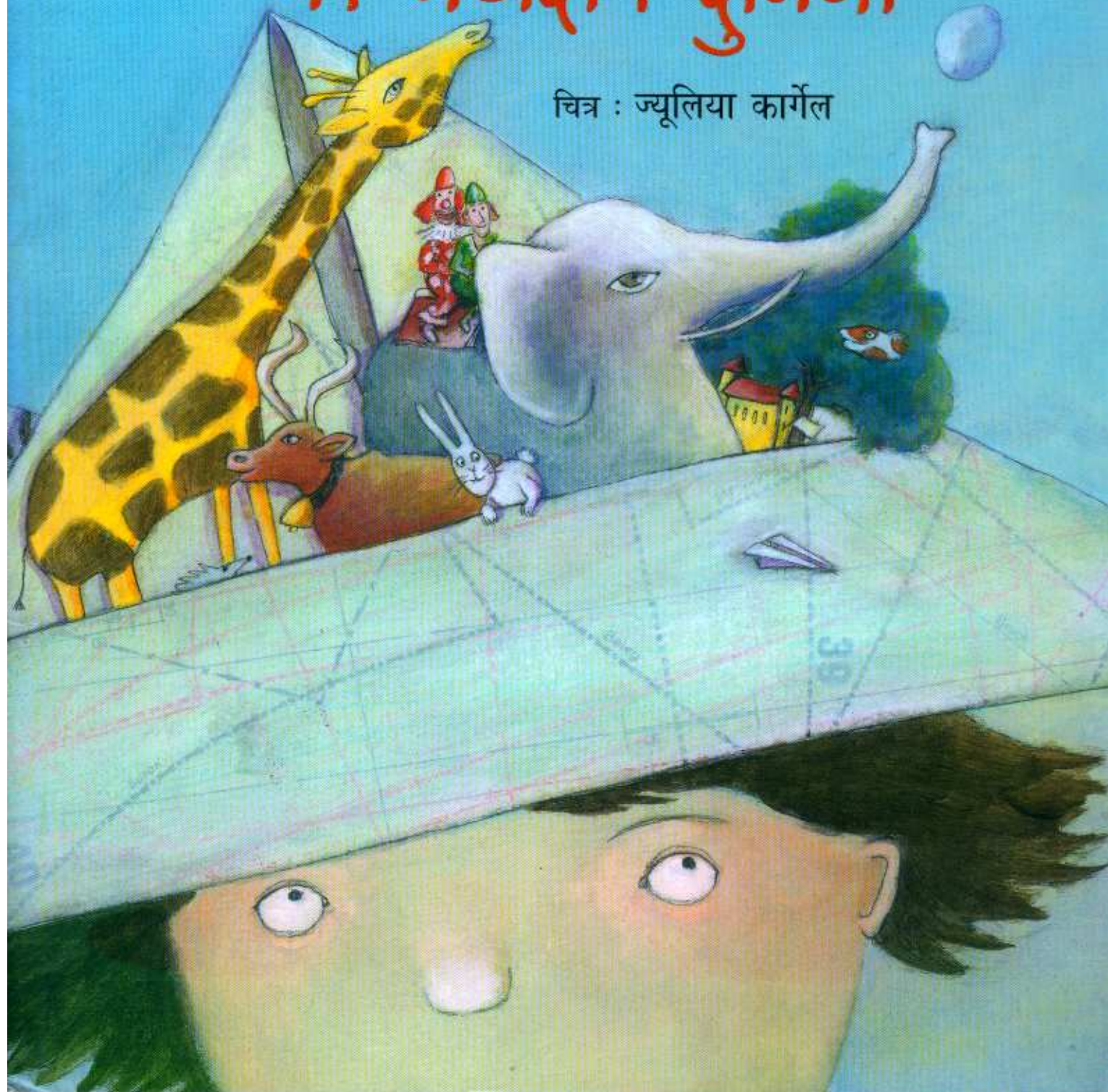
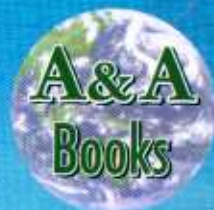


डोरिस डोरी

# मिमी

## की मजेदार दुनिया

चित्र : ज्यूलिया कार्गेल



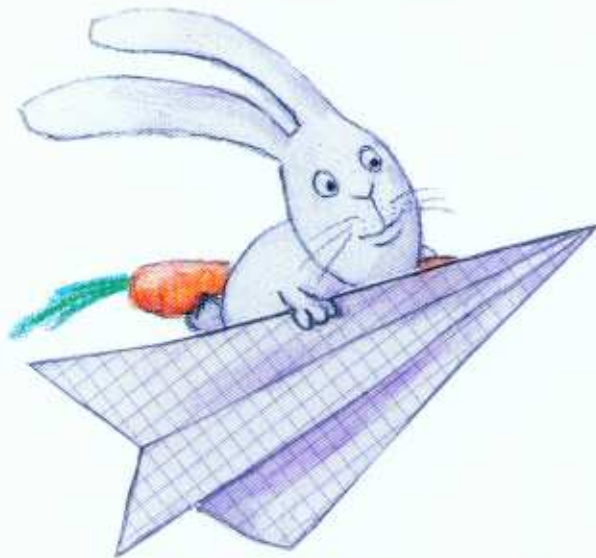


डोरिस डोरी

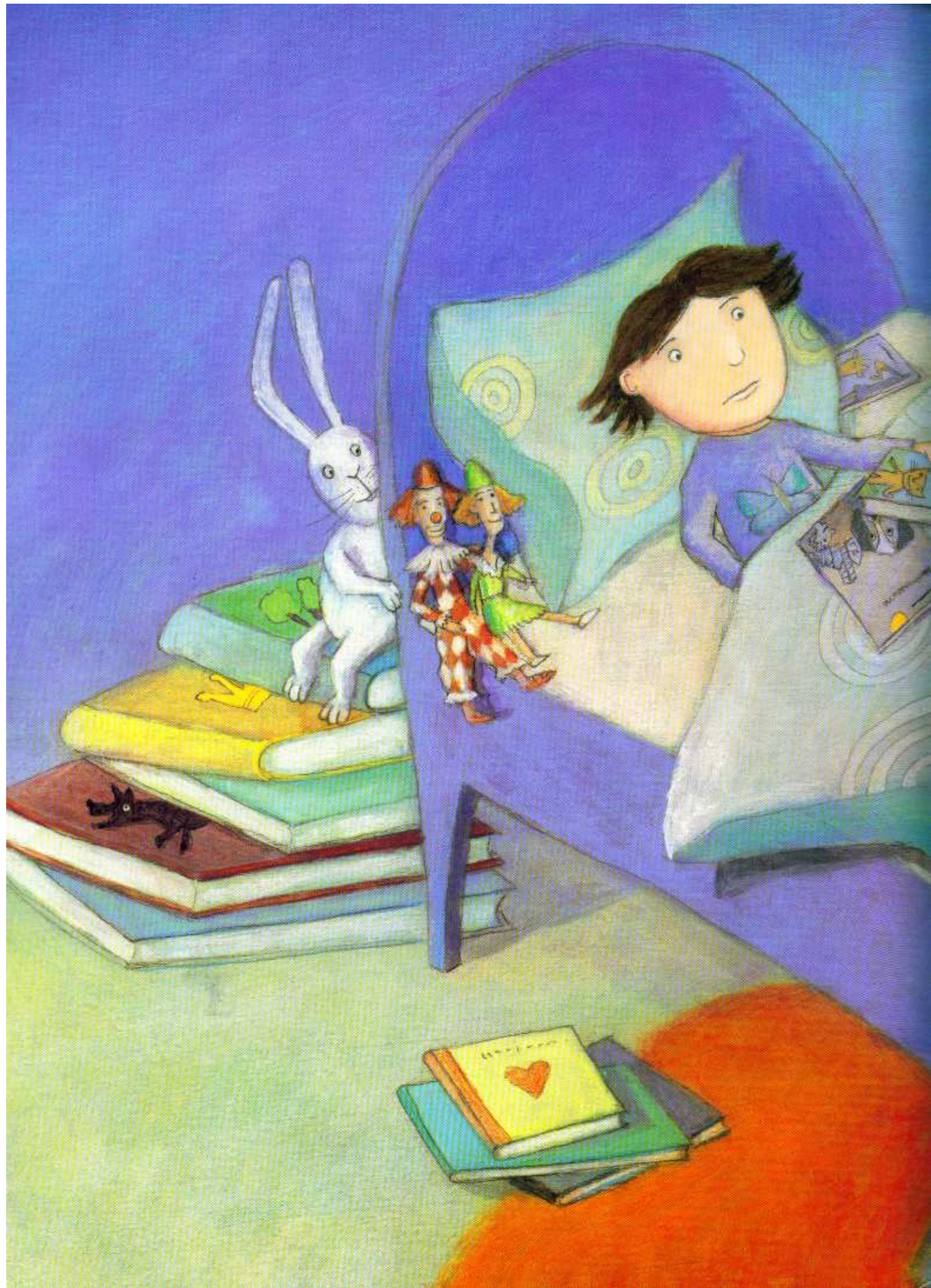
# मिमी की मजेदार दुनिया

चित्र : ज्यूलिया कार्गेल

अनुवाद : अरुंधती देवस्थले

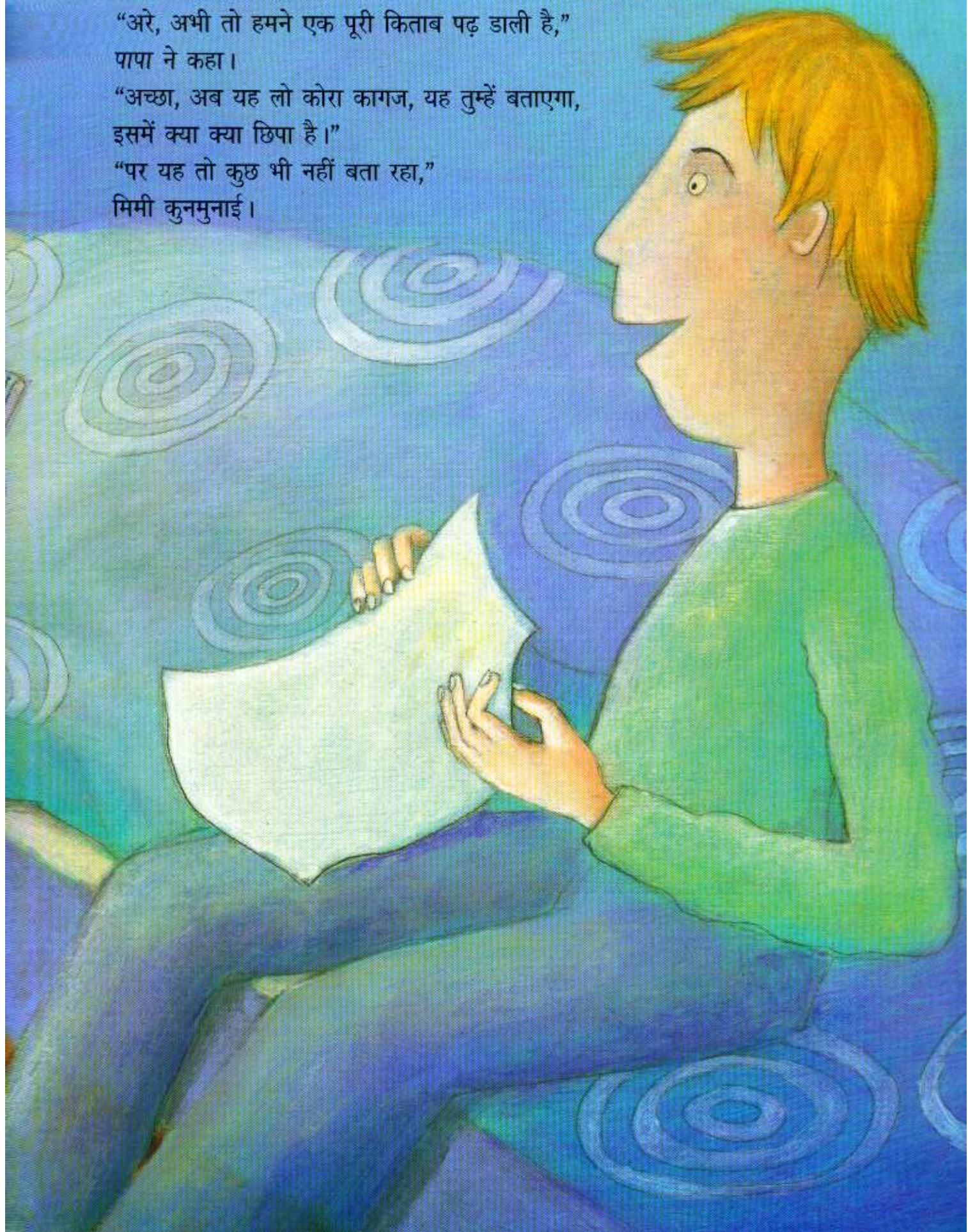




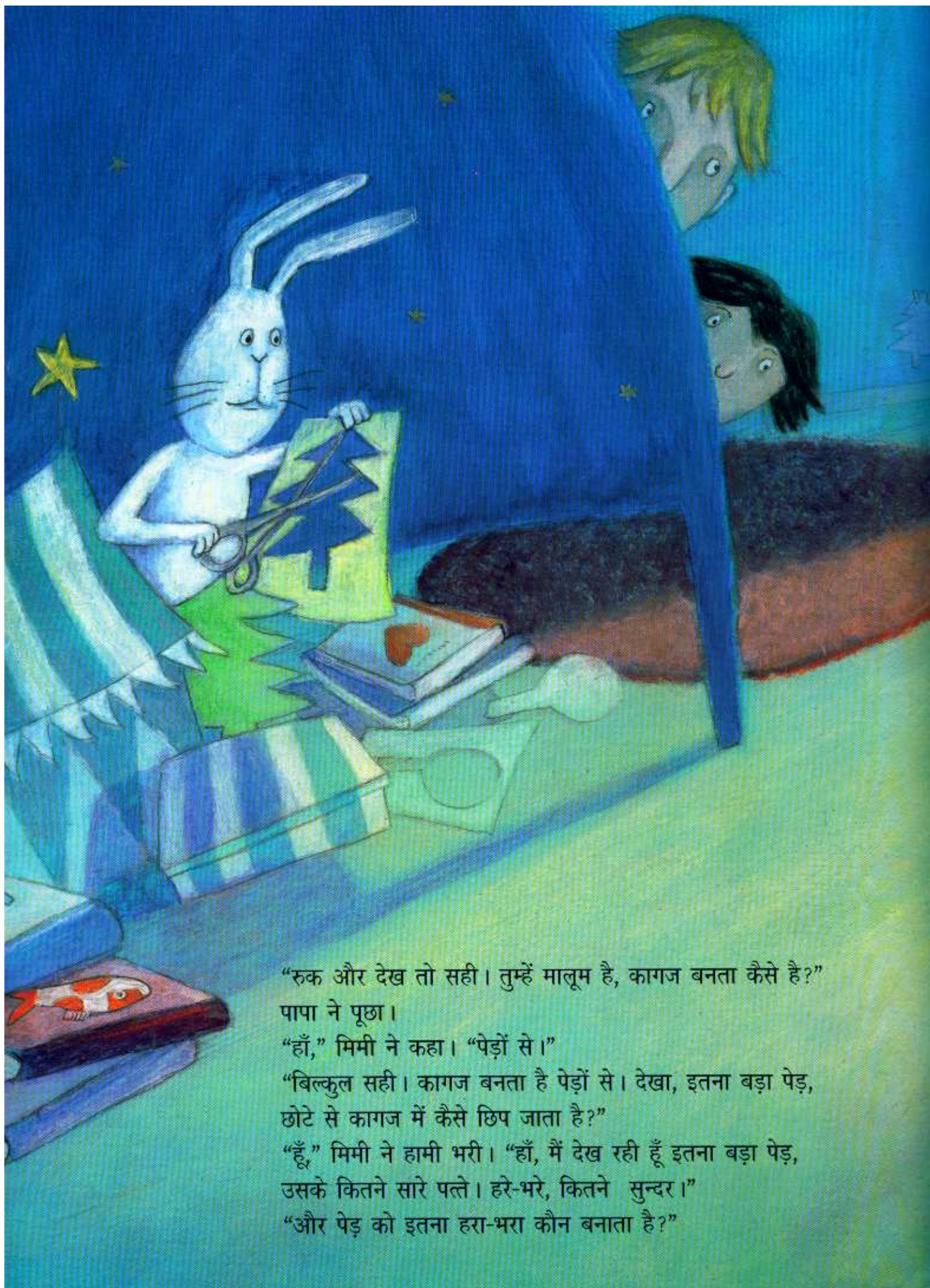




मिमी के पापा एक किताब से कहानी पढ़ते हुए उसे सुला रहे हैं।  
कहानी खत्म होते ही मिमी एक और कहानी की फरमाइश करती है।  
“अरे, अभी तो हमने एक पूरी किताब पढ़ डाली है,”  
पापा ने कहा।  
“अच्छा, अब यह लो कोरा कागज, यह तुम्हें बताएगा,  
इसमें क्या क्या छिपा है।”  
“पर यह तो कुछ भी नहीं बता रहा,”  
मिमी कुनमुनाई।







“रुक और देख तो सही। तुम्हें मालूम है, कागज बनता कैसे है?”  
पापा ने पूछा।

“हाँ,” मिमी ने कहा। “पेड़ों से।”

“बिल्कुल सही। कागज बनता है पेड़ों से। देखा, इतना बड़ा पेड़,  
छोटे से कागज में कैसे छिप जाता है?”

“हूँ,” मिमी ने हामी भरी। “हाँ, मैं देख रही हूँ इतना बड़ा पेड़,  
उसके कितने सारे पत्ते। हरे-भरे, कितने सुन्दर।”

“और पेड़ को इतना हरा-भरा कौन बनाता है?”





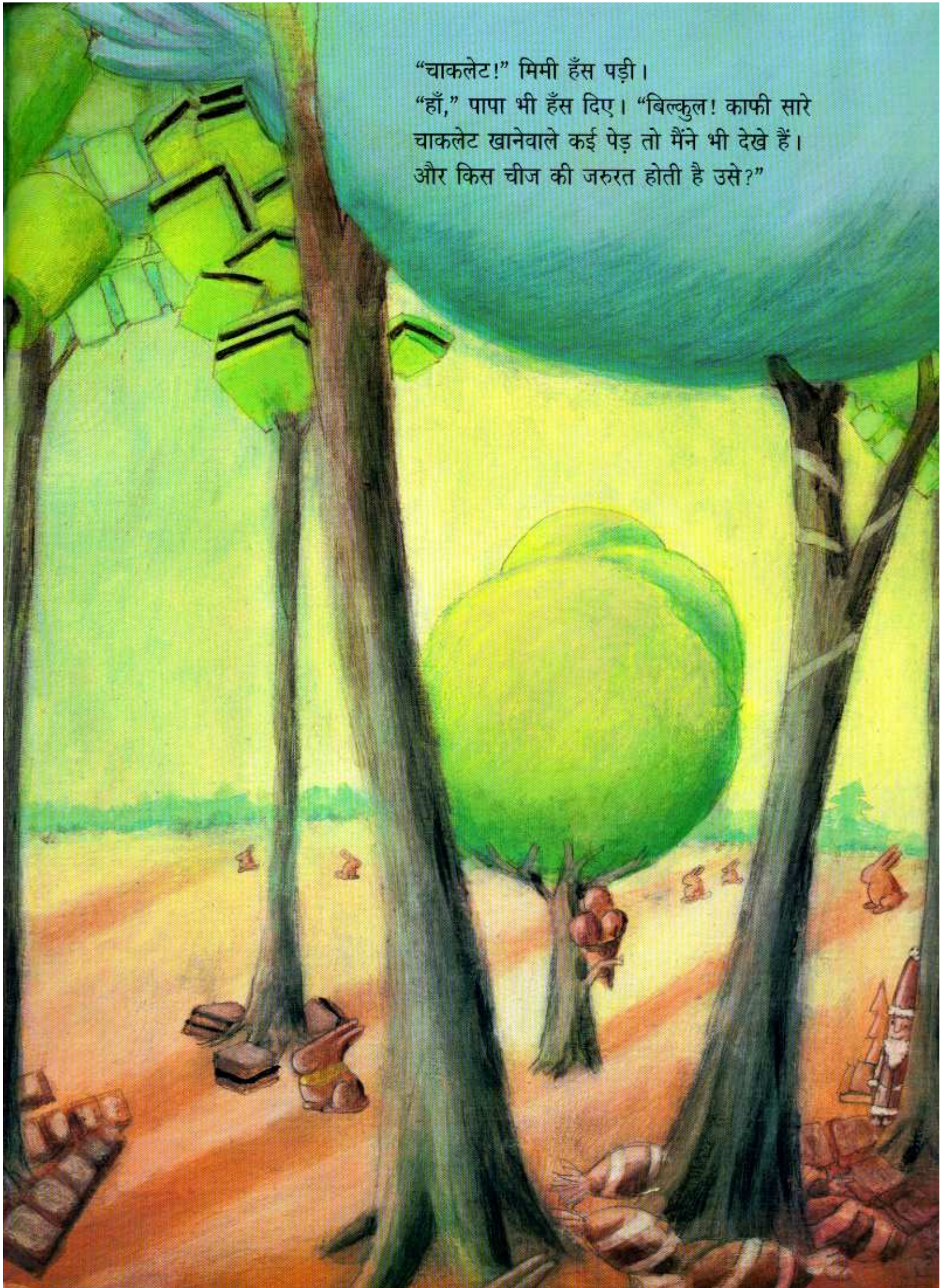






“चाकलेट!” मिमी हँस पड़ी।

“हाँ,” पापा भी हँस दिए। “बिल्कुल! काफी सारे  
चाकलेट खानेवाले कई पेड़ तो मैंने भी देखे हैं।  
और किस चीज की जरूरत होती है उसे?”







“बारिश की! वह देखो, उस पेड़ के ऊपर एक बड़ा-सा बारिश वाला बादल नजर आ रहा है।”  
मिमी ने कागज की ओर इशारा किया।  
“फिर से धूप निकले तो बता देना, हम उस पेड़ के नीचे पिकनिक मनाएँगे,” मिमी के पापा ने कहा।  
“मौसम तो अच्छा है, अभी चलिए न!” मिमी बोली।







पापा का हाथ पकड़ कर मिमी उन्हें वहाँ ले गई।  
“यहाँ देखो हरी दूब नजर आ रही है।”  
“लगता है, कल रात यहाँ कोई हिरन आ कर सोया था,”  
उसके पापा ने कहा। “वाकई, मुझे ऐसा लग रहा है।”  
“सच?” मिमी दंग रह गई।  
“हाँ, वहाँ देखो, उस झाड़ी में।”  
“शू शू!” मिमी फुसफुसाई। “वह हमारी तरफ देख रहा है।  
चुपचाप देखो ताकि वह भाग न जाए जंगली चूहे की तरह!”  
“कौन-सा जंगली चूहा?” पापा ने पूछा।  
“वह रहा, बिल्कुल आपके पैरों के पास।”  
“ओहो!” मिमी के पापा ने कहा।  
“अब देखा मैंने! सब छिपी चीजें  
नजर आने लगी हैं...”





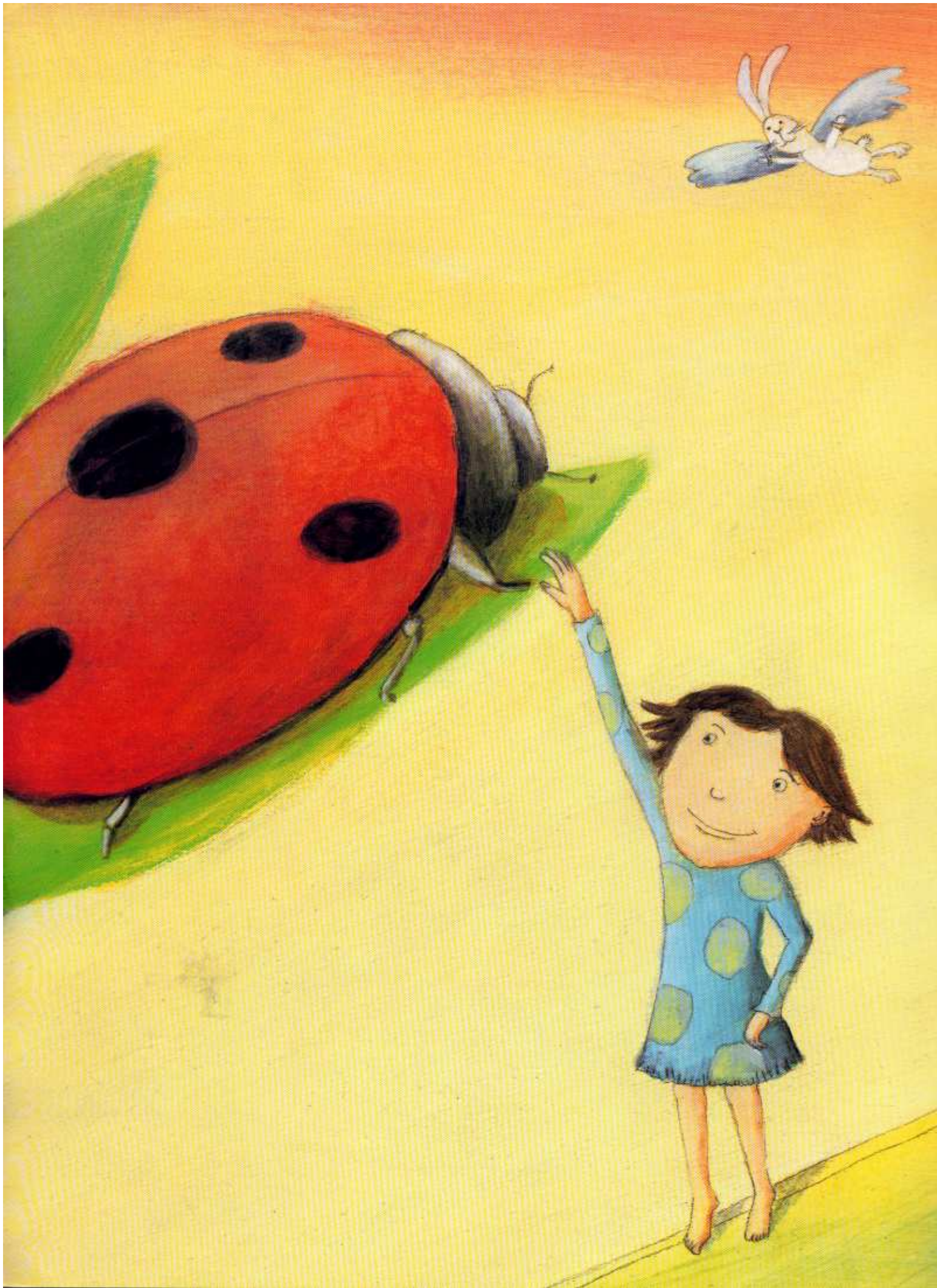




“वह देखो, एक सोन पंखी,” मिमी चिल्लाई।  
“आपके हाथ पर चढ़ने जा रहा है!”  
“गिनो तो, इस पर कितने गोले हैं?” पापा ने पूछा।  
“एक, दो, तीन, चार, पाँच,” मिमी ने गिनते कहा,  
“पता है, यह भी मेरी तरह पाँच का हुआ है!”

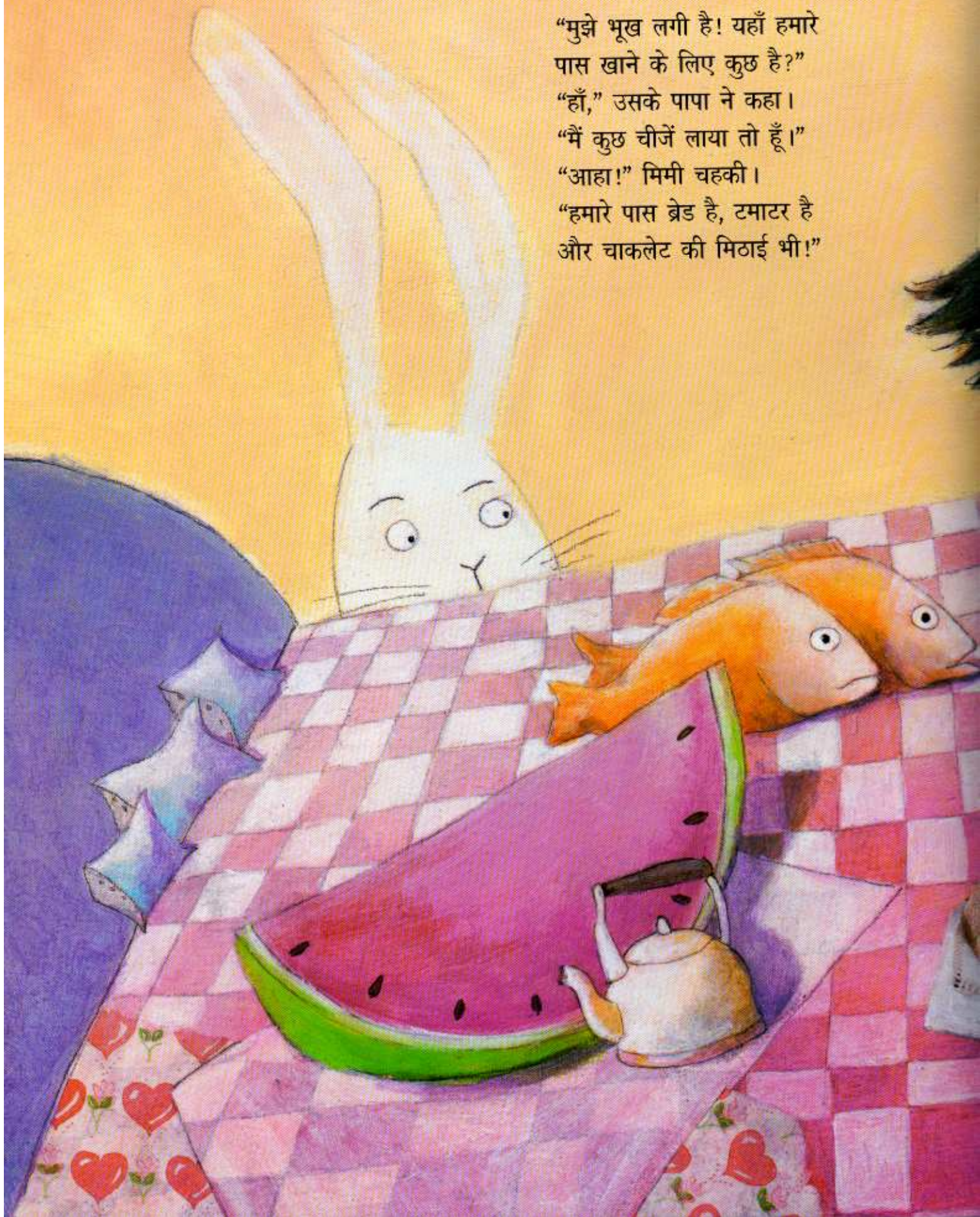




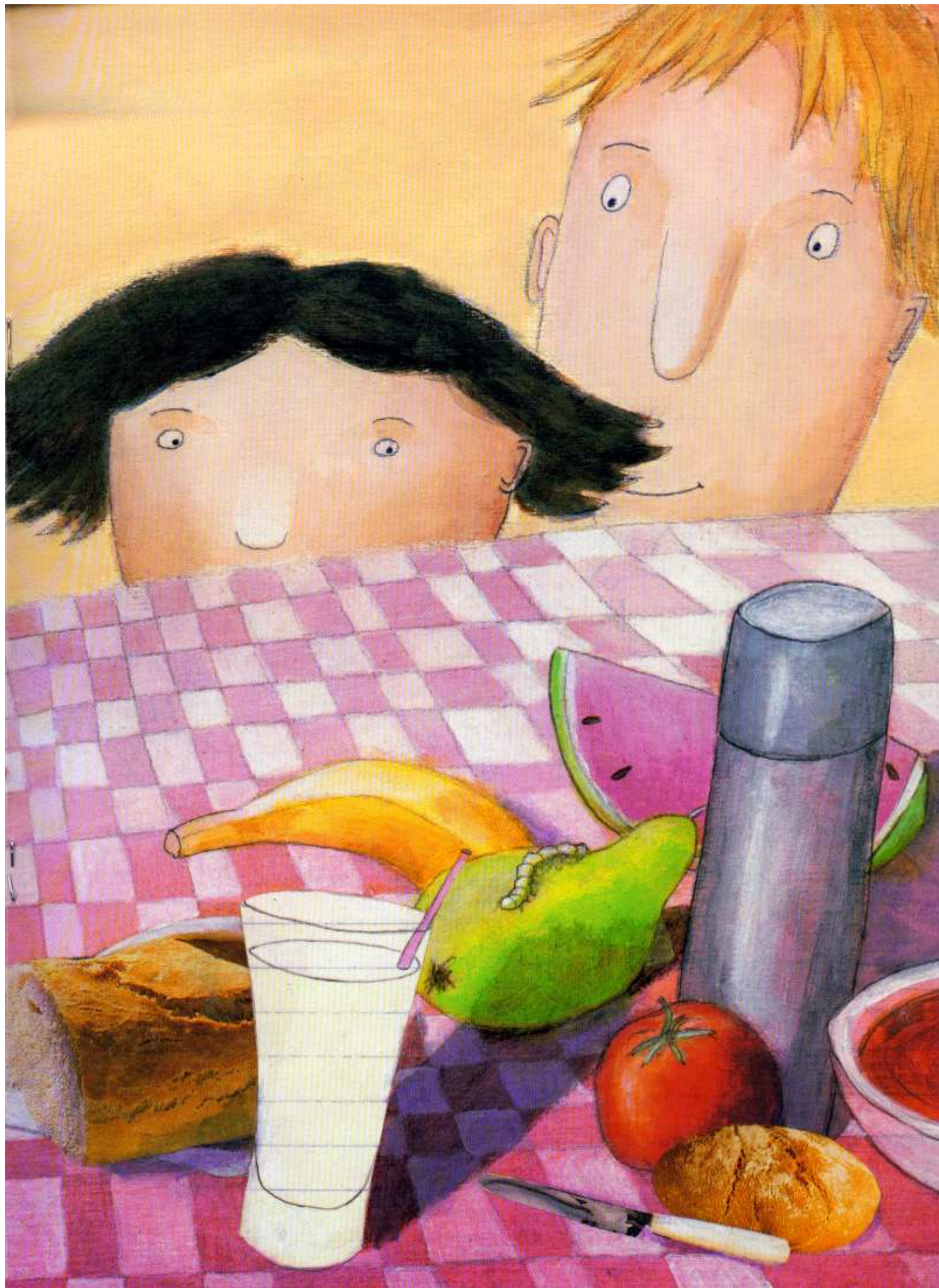




“मुझे भूख लगी है! यहाँ हमारे  
पास खाने के लिए कुछ है?”  
“हाँ,” उसके पापा ने कहा।  
“मैं कुछ चीजें लाया तो हूँ।”  
“आहा!” मिमी चहकी।  
“हमारे पास ब्रेड है, टमाटर है  
और चाकलेट की मिठाई भी!”











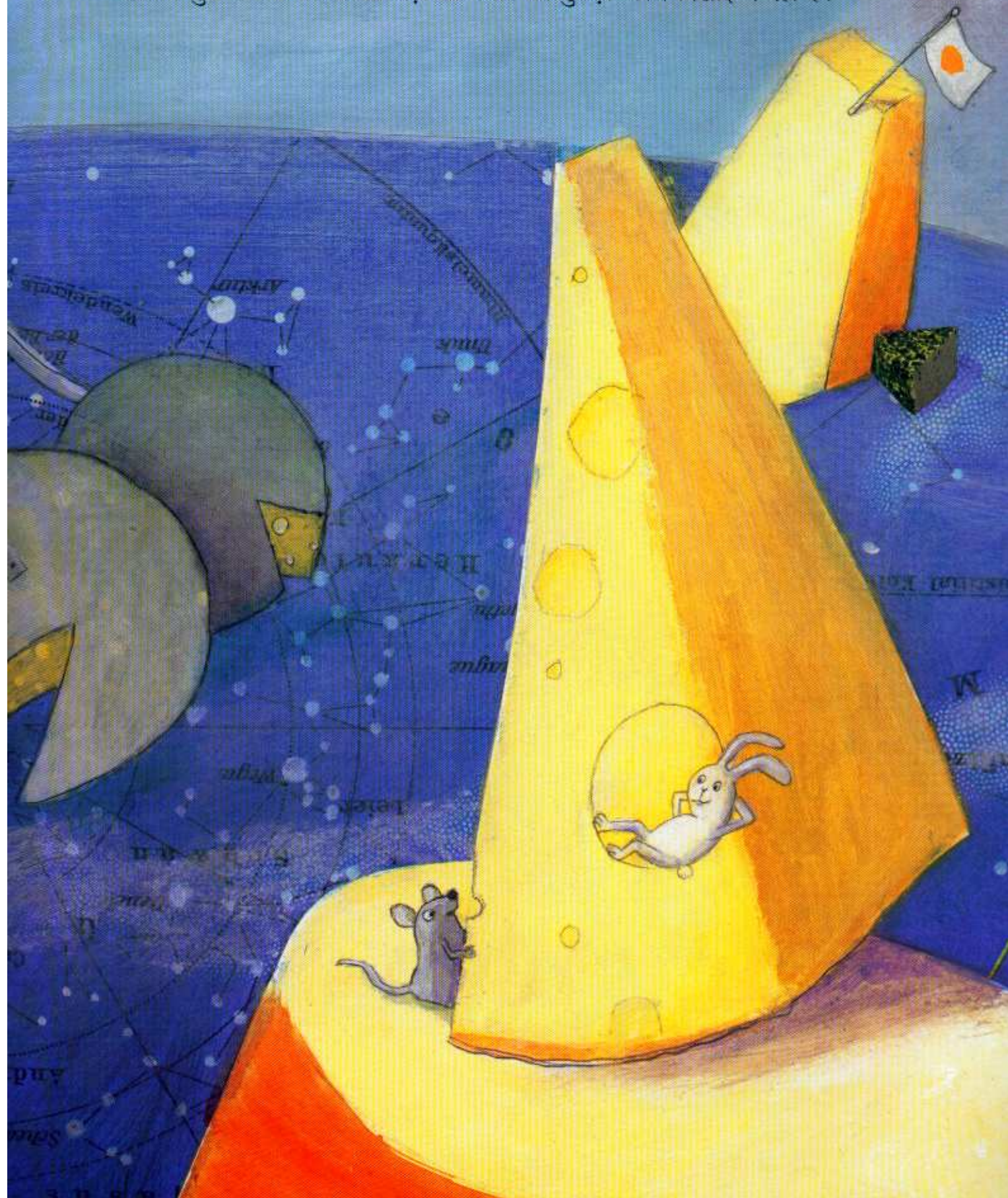


“वाकई?”

“हाँ! आपको नजर नहीं आ रहीं?”

“नहीं!” पापा हँसने लगे। “मैंने चाकलेट की मिठाई तो देखी ही नहीं।

लेकिन मुझे अपनी पसन्द का बड़ा-सा पनीर का टुकड़ा जरूर दिखाई दे रहा है!”









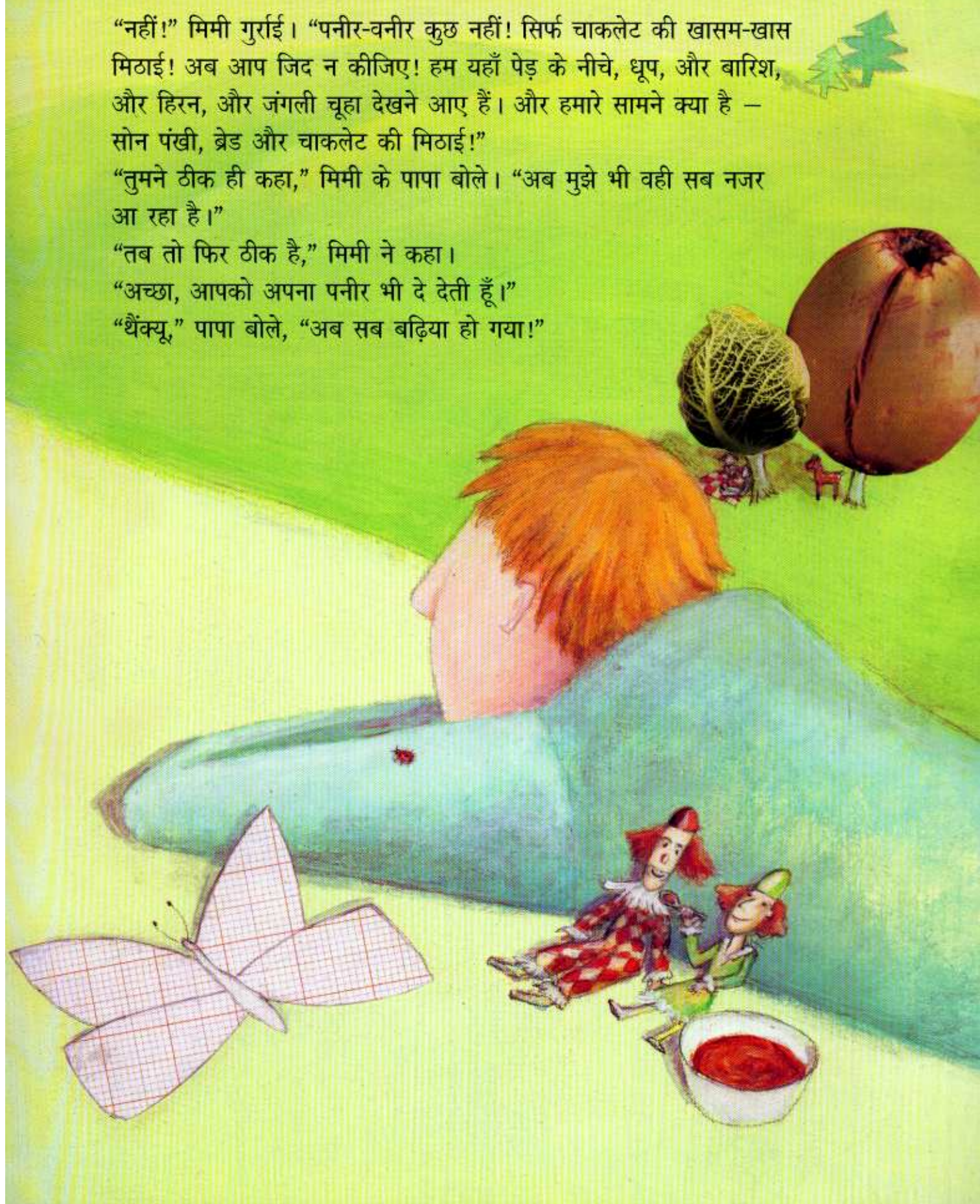
“नहीं!” मिमी गुर्राई। “पनीर-वनीर कुछ नहीं! सिर्फ चाकलेट की खासम-खास मिठाई! अब आप जिद न कीजिए! हम यहाँ पेड़ के नीचे, धूप, और बारिश, और हिरन, और जंगली चूहा देखने आए हैं। और हमारे सामने क्या है — सोन पंखी, ब्रेड और चाकलेट की मिठाई!”

“तुमने ठीक ही कहा,” मिमी के पापा बोले। “अब मुझे भी वही सब नजर आ रहा है।”

“तब तो फिर ठीक है,” मिमी ने कहा।

“अच्छा, आपको अपना पनीर भी दे देती हूँ।”

“थैंक्यू,” पापा बोले, “अब सब बढ़िया हो गया!”

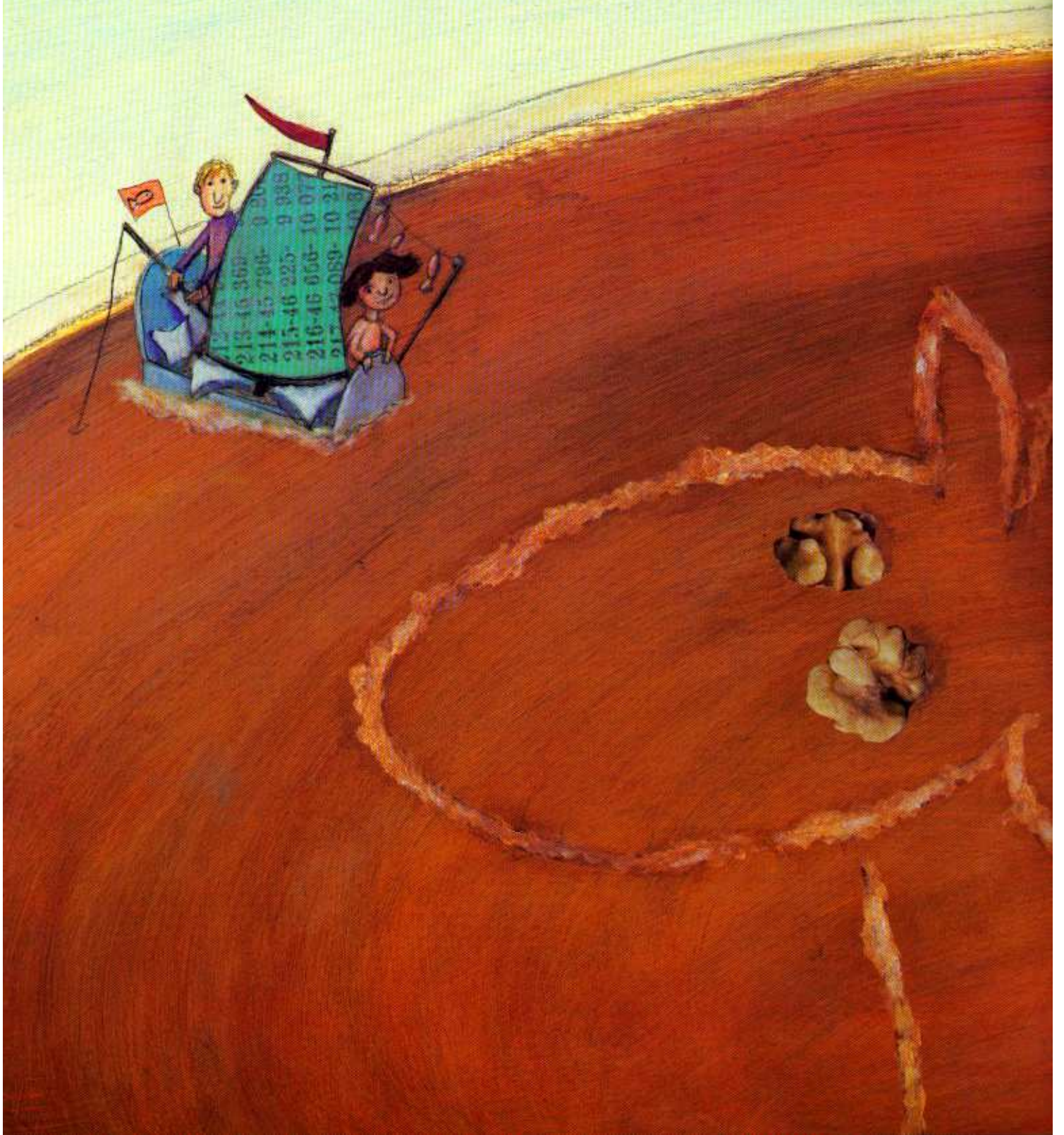




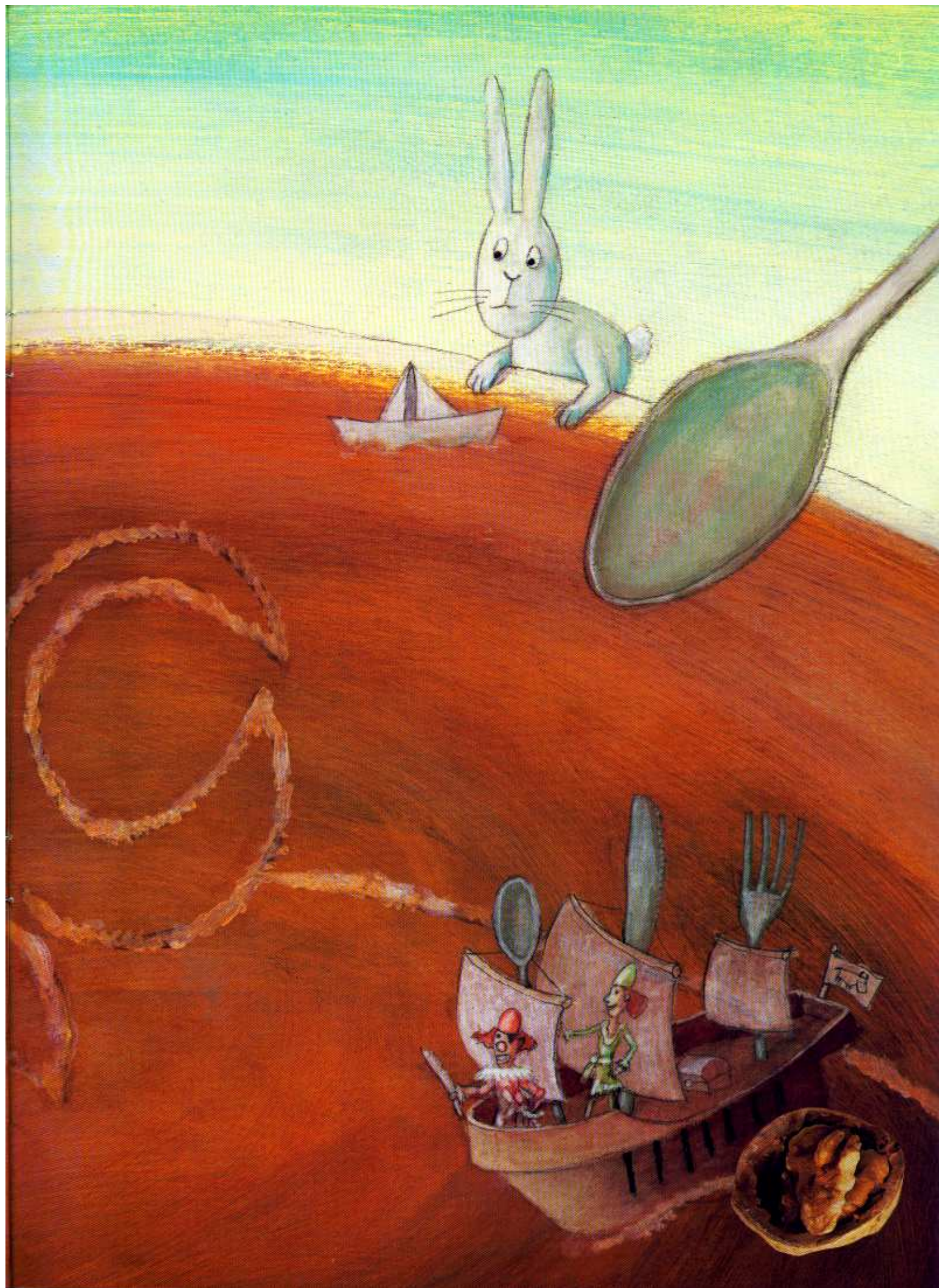
“अच्छा, अब मुझे कुछ न कहिए, मैं अपनी मिठाई खा रही हूँ,” मिमी ने कहा।  
“ठीक है,” पापा ने कहा। “तो फिर खाओ अपनी मिठाई, इधर-उधर देखने की जरूरत नहीं है।”

“मैं देख इसलिए रही हूँ, क्योंकि मुझसे वह कुछ छिपा रही है!”  
मिमी ने जवाब दिया।

“अच्छा! वह कौन?” पापा ने पूछा।



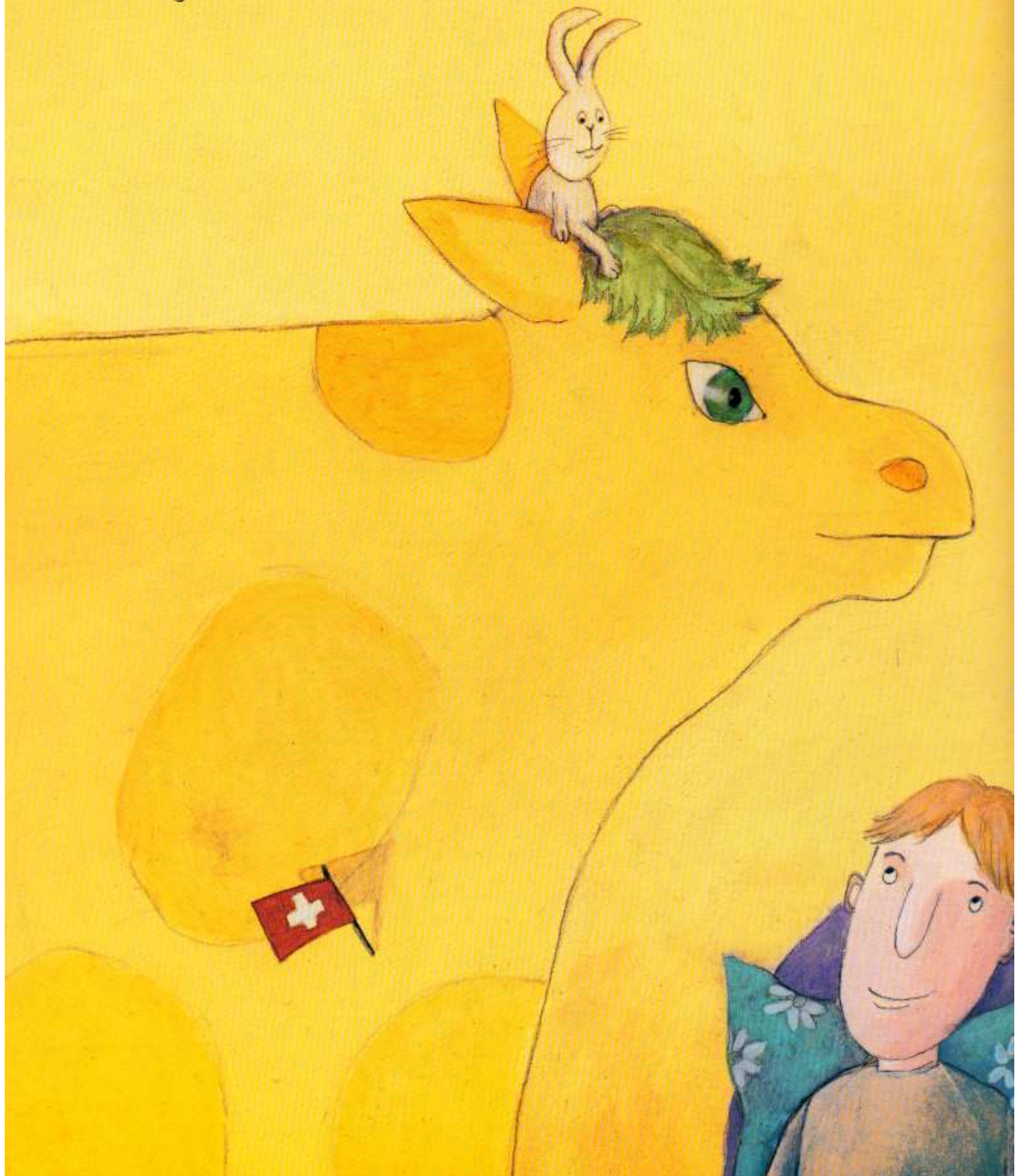






“मुझे अपनी मिठाई में एक गाय नजर आ रही है, क्योंकि मिठाई उसके दूध से बनी है। वह जो गाय है न, वह हरी घास पर खड़ी है और फूल भी खा रही है। आपके पनीर में भी एक गाय नजर आ रही है, पर वह मेरी गाय जितनी अच्छी नहीं है।”

“बिल्कुल नहीं...” उसके पापा ने कहा।

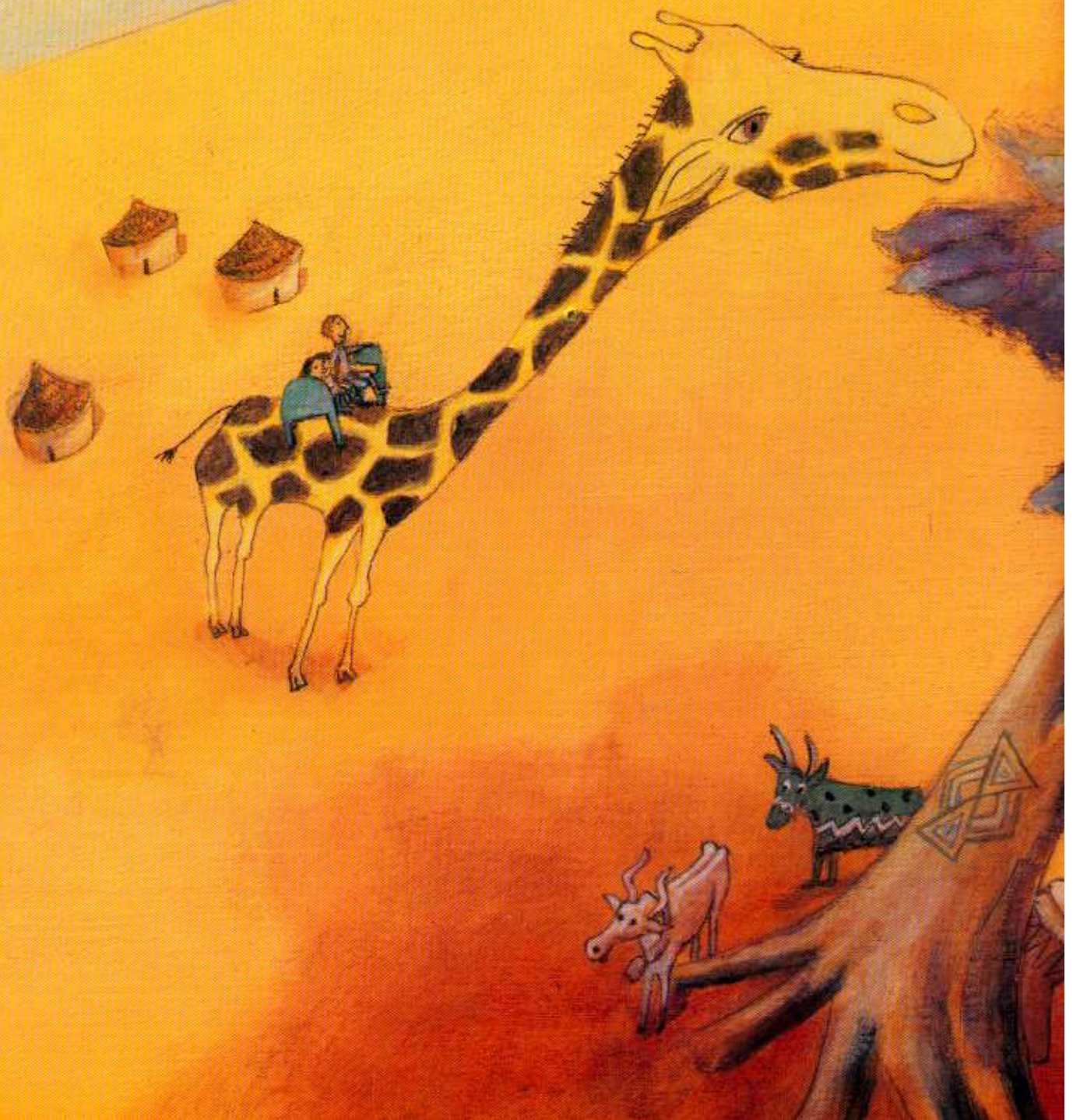








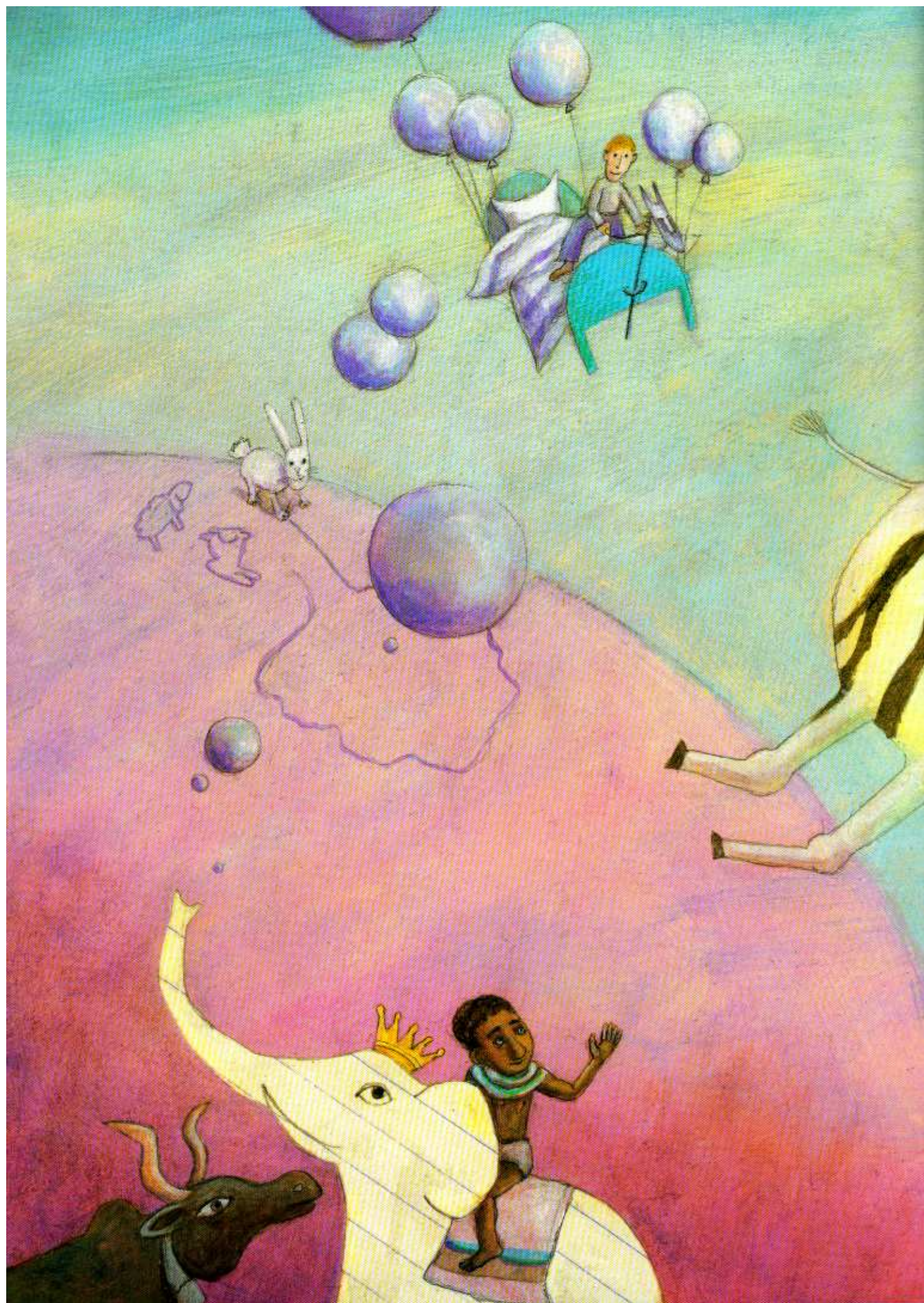
“मेरी गाय अफ्रीका में खड़ी है,” मिमी ने कहा। “एक पेड़ के नीचे।”  
“अरे हाँ,” मिमी के पापा ने कहा। “मैं भी देख रहा हूँ। वहाँ एक जिराफ भी खड़ा पेड़ के पत्ते चबा रहा है।”  
“पेड़ के नीचे, एक लड़के के साथ छोटा-सा हाथी भी है, सूँड़ इधर-उधर घुमाता,” मिमी चिल्लाई।  
“उस लड़के ने नन्हे हाथी को प्यार से थपकी दी?” पापा ने पूछा।





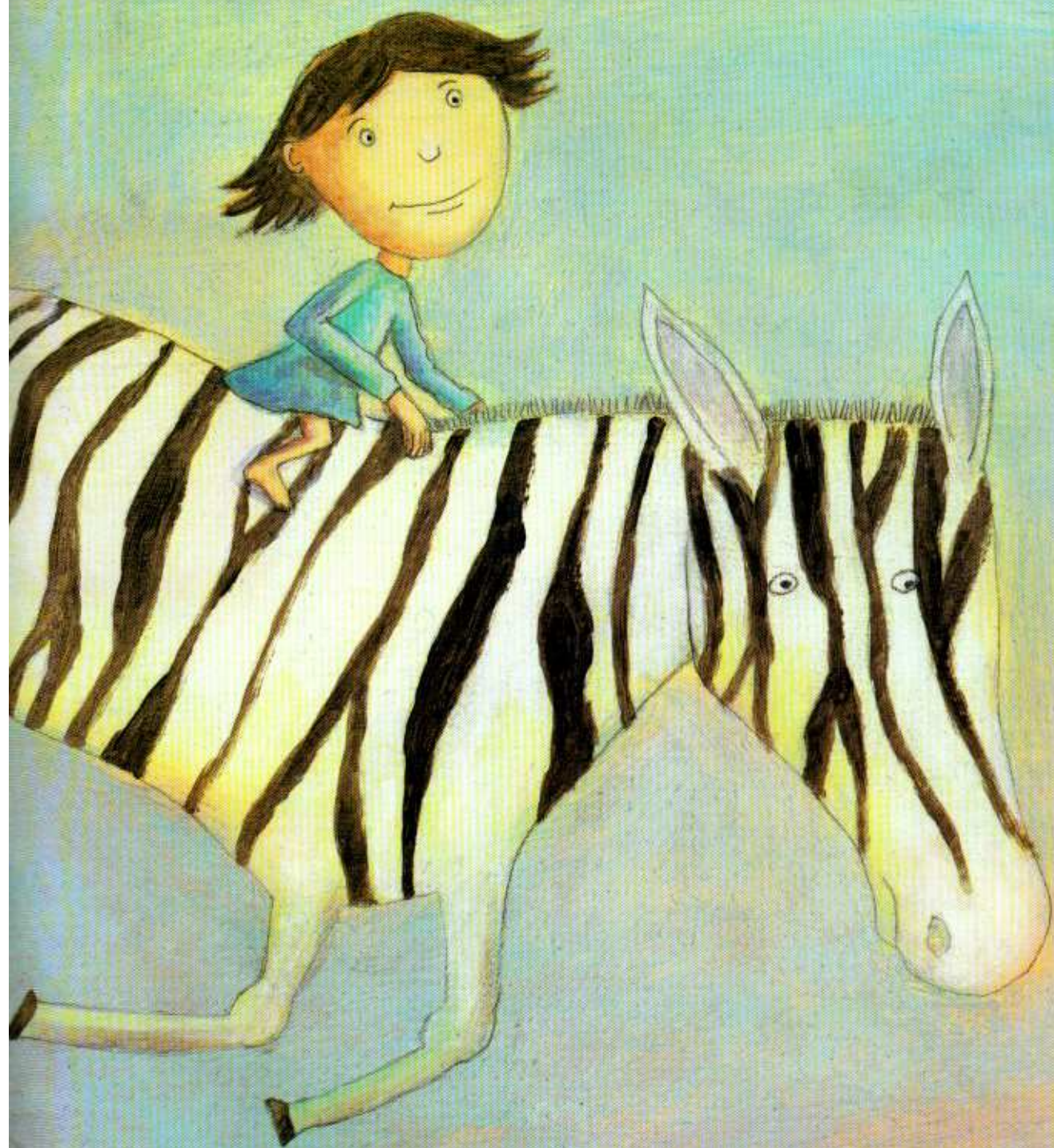






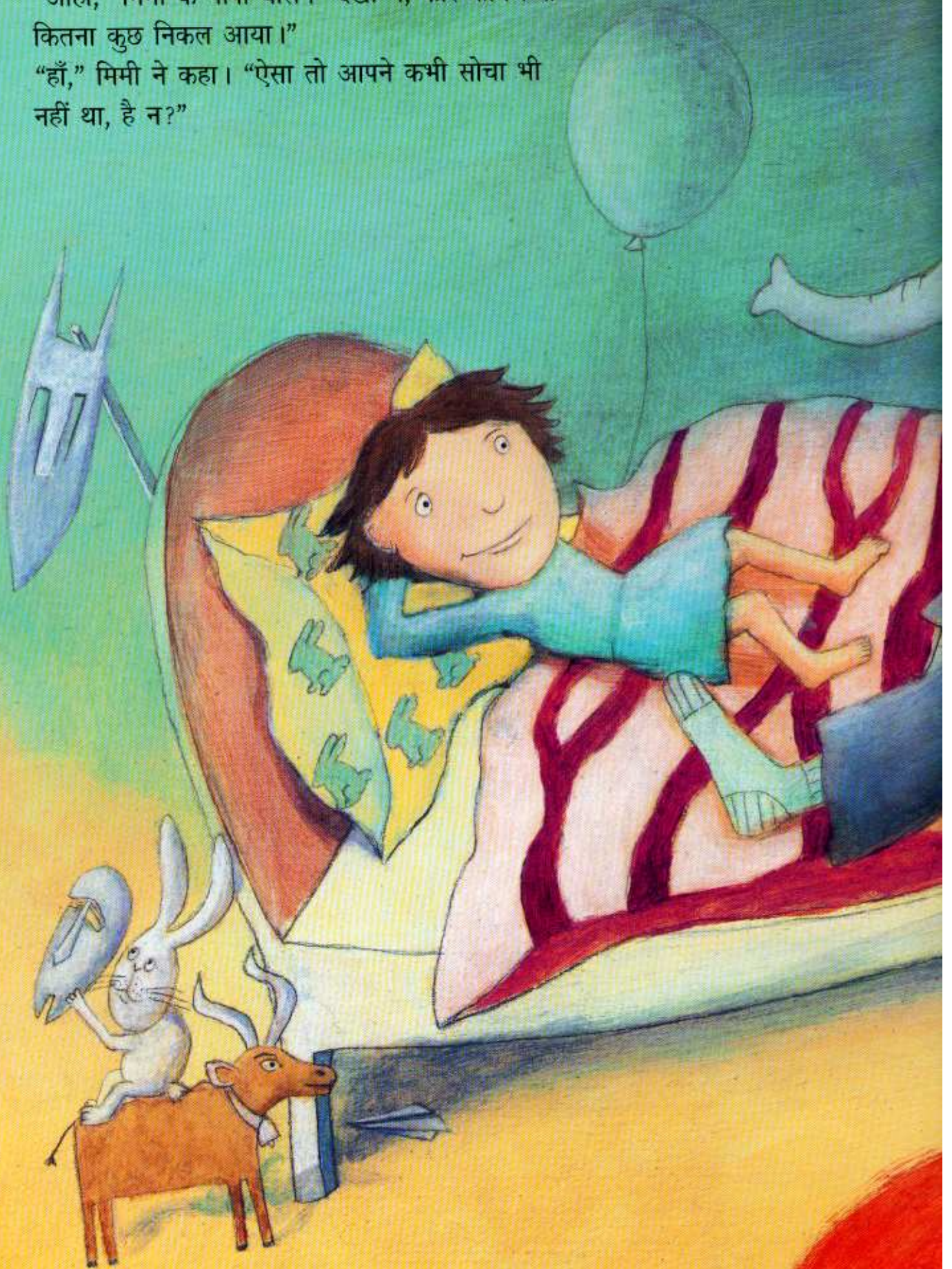


“हाँ। और वह देखो, मैं आ रही हूँ, एक जेब्रा की  
पीठ पर सवार!” मिमी ने कहा।

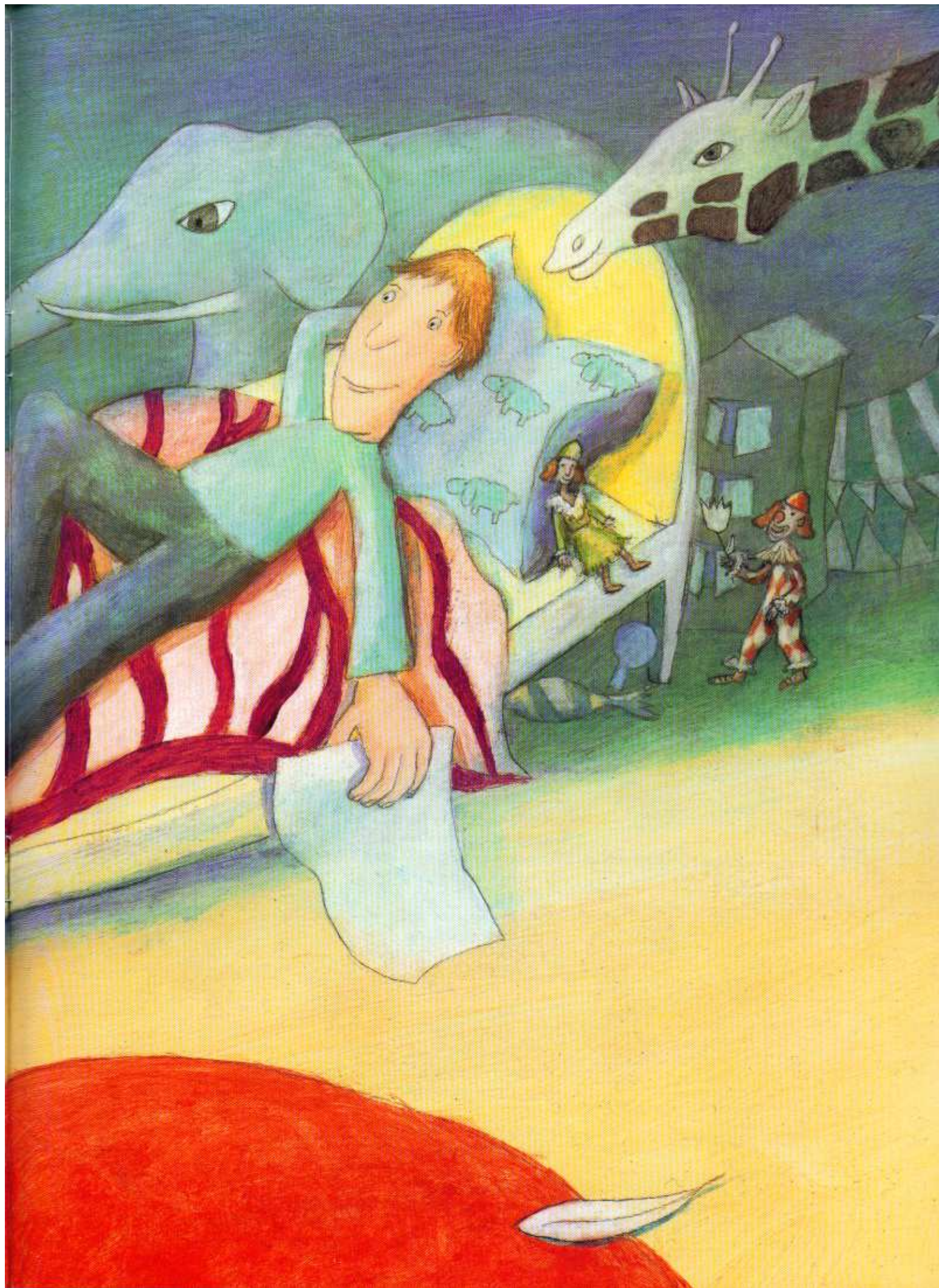




“ओहो,” मिमी के पापा बोले। “देखो न, कोरे कागज से  
कितना कुछ निकल आया।”  
“हाँ,” मिमी ने कहा। “ऐसा तो आपने कभी सोचा भी  
नहीं था, है न?”











मिमी को सुलाने के लिए उसके पापा एक कहानी तो सुना चुके हैं।  
पर मिमी को नींद आ ही नहीं रही। बातों-बातों में, एक कोरे कागज पर,  
मिमी और पापा एक मजेदार कहानी बना लेते हैं... देखो तो कैसे?

मिमी को जर्मनी से हमारे पास लाई हैं डोरिस डोरी!  
यह “प्यारी बेटी दुलारी बेटी” श्रृंखला की शुरुआत है,  
जो लड़की को प्यार और सम्मान की  
बराबर हकदार मानती है।



₹ 60

ISBN 978-93-80141-19-0



9 789380 141190